

>>> मिनख जमारो बन्दा एलो मत खोवै <<<

मिनख जमारो बन्दा एलो मत खोवै, सुखरत करले जमारा ने ।  
पापी में मुख से राम कोनी निसरै, केशर घुल रही गारा में ॥  
भैंस पदमणी ने गैणों तो पहरायो, काई जाणे नौसर हारा ने ।  
पहर कोणी जाणे बा तो चाल कोनी जाणे, उमर गमादी गोबर  
गारा में ॥ १ ॥

सोने के थाल में सूरी ने परोसी, काई जाणे जीमण हारा ने ।  
जीम कोणी जाणे बा तो जूठ कोणी जाणे, हूरड हूरड करती  
जमारा ने ॥ २ ॥

कांच के महल में कुत्ती ने सुवाई, काई जाणे सोवण हारा ने ।  
सोय कोनी जाणे बा तो ओढ़ कोनी जाणे. घुस घुस मरगी  
गलियारा में ॥ ३ ॥

माणक मोती मूरखा ने दीन्या, दलबा तो बैठ गया सारा ने ।  
हीरा की पारख जौहरी ही जाणे, काई बेरो मूरख गंवारा ने ॥ ४ ॥

अमृतनाथजी अमर भया जोगी, जार गया कांचे पारा ने ।  
भूरा भजन हरिराम का कर ले , हर मिलसी दशवा द्वारा में ॥५॥

जय श्री नाथजी की ...